MEANS OF TRANSPORT THROUGH THE AGES

From the beginning of history, human sensitivity has revealed an urge for mobility leading to a measure of society's progress. The history of this mobility or transport is the history of civilization. A well-known and co-ordinated system of transport plays an important role in the sustained economic growth of a country. It has been seen throughout the history of any nation that a proper, extensive and efficient transport provides indispensable mobility for all citizens and goods and contributes to the economic prosperity of a nation. It is a key factor to social, regional and economic cohesion, including the development of rural areas. It is the essential convenience with which people not just connect but progress. Transport is vital to the economic development and social integration of the country

The Department of Posts is bringing the history of gradual progression in the modes of transportation in country through 20 beautiful Stamps in the form of Prestige Booklet and mixed Sheetlets. In the ancient times Palanquins were used as mode of transport. Palanquin, also known as palki, derived its name from the Sanskrit word 'Palanki' for a bed or couch. A palki was bigger in size and made of wood. There were doors on both sides. A long cylindrical pole was attached to it lengthways through the middle. A palki was usually carried by six or four men. During medieval India Palki were used as most essential wedding transportation means. It was also used to be the conveyance for noble Indian women as well as for Indian landlords of that time. The use of Palanquins is mentioned in literature as early as the Ramayana also. First four stamps depict the different models of palanquins used by people. The introduction of rickshaws in the 1930s' and ever expanding communication system have now made palki an institution of the past and is now used only on special occasions like wedding ceremonies.

Another set of four stamps portray different modes of transport related to Horse Carriages and Carts. Apart from Palkis, Bullock Carts and Horse Carriages were also used as a major mode of transport since ancient times. They are still used today where modern vehicles are too expensive or the infrastructure does not favour them. A bullock cart or ox cart is a two-wheeled or four-wheeled vehicle pulled by oxen. A Tonga is a light horse-drawn carriage used for transportation in India. They are usually pulled by two horses, though some require only one. Tongas and horse carriages are still used in some smaller cities for economic activity, mainly to carry heavy goods within the city limits.

Further development in the modes of transport could be seen in 19th century when in around 1880, rickshaws appeared in India. It was first seen in Shimla and then, 20 years later in Kolkata. Here they were initially used by Chinese traders to transport goods. Pulling a rickshaw was often the first job for peasants migrating to these cities. Rickshaw began as a two or three-wheeled passenger cart, called a pulled rickshaw, generally pulled by one man with one passenger. The first known use of the term was in 1887. Over time, cycle rickshaws, auto rickshaws, and school rickshaws came into usage. The set of four stamps depict different versions of Rickshaws used by countrymen.

As early as 1898 the first motorcar was seen on Indian roads. Cars had to be imported into India. These are truly western vintage models. Local assembly of cars began during the years between the World Wars and assembly units were set up in Mumbai, Kolkata and Chennai. The Rolls Royce Silver Ghost was the origin of Rolls-Royce's claim of making the "Best car in the world". This Vintage Car is considered to be the most valuable Vintage car. Austin Twenty is a large car that was introduced by Austin after the end of the First World War in April 1919 and continued in production until 1930. After the Austin 20/6 model was introduced in 1927, the first model was referred to as the Austin 20/4. In the category of Vintage Cars, another famous model is the Chevrolet Series BA Confederate which is an American vehicle manufactured by Chevrolet in 1932. Production slipped significantly from over 6 lakhs cars to around 3 lakhs during Great Depression, but was still sufficient for Chevrolet to retain first place in the American car sales table. The set of beautiful four stamps depict the exclusive models of Vintage Cars.

Public transport is the lifeline of social mobility. Passenger Road Transport Service (PRTS) is an essential, connected to the economic and social development of the nation. Different means of public transport comprises of Trams, Metros, Buses and Double decker buses. The advent of British colonialism saw trams being introduced in many cities including Mumbai and Kolkata. They are still in use in Kolkata and provide an emission-free means of transport. Buses make up over 90% of public transport in Indian cities and serve as a cheap and convenient mode of transport for all classes of society. Metro has become another very popular means of transport in few major cities of the country. The set of 4 stamps portray the means of public transport beautifully.

The Department is pleased to bring out a Prestige booklet on Modes of Transport through Different Ages with 6 mixed Sheetlets.

Credits:-

Text	:	Based on the material available on internet
Stamps/Booklet/Sheetlets/ Maxim Cards/FDCs/Brochure/ Cancellation Cachets	:	Shri Brahm Prakash

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

विभिन्न युगों में यातायात के साधन
MEANS OF TRANSPORT THROUGH THE AGES

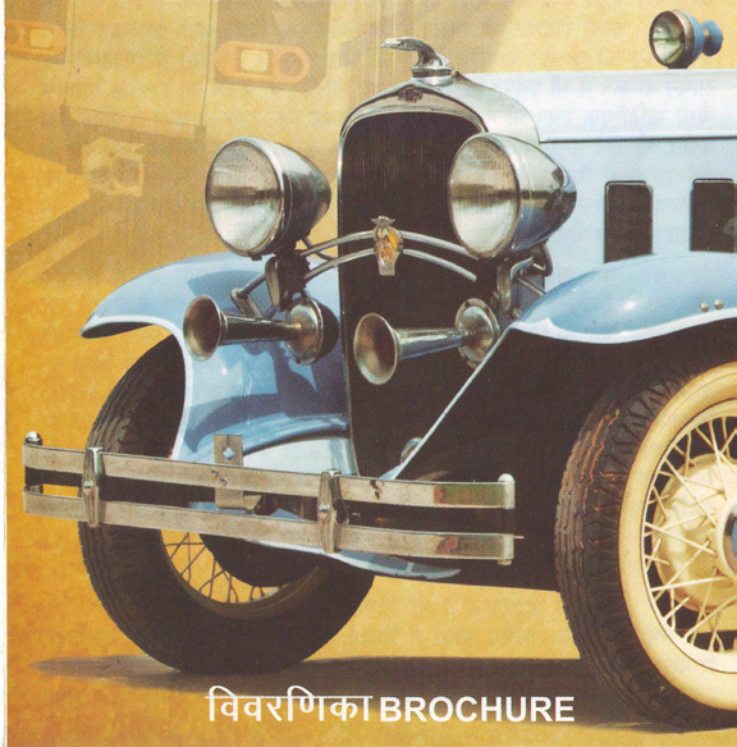

विवरणिका BROCHURE

विभिन्न युगों में यातायात के साधन

इतिहास के शुरूआती दौर से ही मनुष्य के मन में आवागमन की इच्छा प्रबल रही है और मनुष्य की यह भावना समाज की प्रगति का पैमाना बनी। इस आवागमन अथवा यातायात का इतिहास, हमारी सभ्यता का इतिहास है। किसी भी देश की सतत आर्थिक प्रगति में यातायात की सुप्रसिद्ध और समन्वित प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी राष्ट्र के समग्र इतिहास को देखें, तो यह पता चलता है कि यातायात की समुचित, व्यापक और कुशल प्रणाली उस देश के नागरिकों और वस्तुओं को अनिवार्य गतिशीलता प्रदान करती है और राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में योगदान देती है। यह, सामाजिक, क्षेत्रीय और आर्थिक संबद्धता, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों का विकास भी शामिल है, का प्रमुख घटक है। यह एक ऐसी सुविधा है जिसके जरिए लोग न केवल एक दूसरे के साथ जुड़ते हैं बल्कि प्रगति भी करते हैं। यातायात, देश के आर्थिक विकास और सामाजिक एकीकरण के लिए महत्वपूर्ण है।

डाक विभाग, प्रेस्टिज पुस्तिकाओं और मिश्रित शीटलेट के रूप में 20 खूबसूरत डाक-टिकटों के माध्यम से देश में यातायात के साधनों के क्रमिक विकास के इतिहास को उजागर कर रहा है। प्राचीन काल में पालकियों को यातायात के साधन के रूप में प्रयोग में लाया जाता था। पालकी शब्द, संस्कृत शब्द 'पलंकी' से लिया गया है, जिसका अर्थ है शय्या। पालकी का आकार अपेक्षाकृत बड़ा हुआ करता था और इसे लकड़ी से बनाया जाता था। इसके दोनों ओर दरवाजे होते थे। इसके साथ लंबाई में एक बड़ा बेलनाकार डंडा जोड़ा जाता था, जो इसके केन्द्र से होकर गुजरता था। पालकी को सामान्यतया छः अथवा चार व्यक्तियों द्वारा उठाया जाता था। भारत में मध्यम काल के दौरान पालकी को विवाह के अवसर पर एक सर्वाधिक जरूरी यातायात के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। पालकी को उस समय की कुलीन भारतीय महिलाओं और भारतीय जमींदारों के यातायात के साधन के रूप में भी प्रयुक्त किया जाता था। पालकी के प्रयोग का उल्लेख रामायण जैसी साहित्यिक रचनाओं में भी मिलता है। प्रथम चार डाक-टिकटों में लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली पालकियों के चार अलग-अलग मॉडल अंकित किए गए हैं। वर्ष 1930 में रिक्शा के आ जाने से तथा संचार प्रणाली के निरंतर विकास के फलस्वरूप पालकी, अतीत की एक प्रथा मात्र ही रह गई है और अब इसका प्रयोग विवाह समारोह जैसे विशेष अवसरों पर ही किया जाता है।

चार डाक-टिकटों के दूसरे सेट में घोड़ा-गाड़ी और छकड़े से जुड़े यातायात के विभिन्न साधन अंकित किए गए हैं। पालकी के अलावा, बैलगाड़ी और घोड़ा-गाड़ी को भी प्राचीन समय से यातायात के प्रमुख साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। उनका प्रयोग आज भी उन जगहों पर किया जाता है, जहां आधुनिक वाहन या तो बहुत मंहगे हैं अथवा उनके अनुकूल आधारभूत ढांचा उपलब्ध नहीं है। बैलगाड़ी एक दुपहिया अथवा चार पहिया वाहन है जिसे बैलों द्वारा खींचा जाता है। तांगा, घोड़े द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी है जिसका प्रयोग भारत में यातायात के साधन के रूप में किया जाता है। इसे, सामान्यतया दो घोड़ों द्वारा खींचा जाता है, यद्यपि कुछेक में केवल एक ही घोड़े की आवश्यकता होती है। कुछ छोटे शहरों में तांगा और घोड़ा-गाड़ी का प्रयोग मुख्यतः आर्थिक कार्यकलापों, जैसे शहर के अंदर ही भारी सामान को लाने-ले जाने के लिए किया जाता है।

यातायात के साधनों में और विकास 19वीं शताब्दी में देखा जा सकता है, जब वर्ष 1880 के लगभग भारत में रिक्शा की शुरूआत हुई। सबसे पहले इसे शिमला में देखा गया तथा 20 वर्ष बाद यह कलकत्ता में दिखाई दिया। शुरूआत में इनका प्रयोग चीनी व्यापारियों द्वारा माल को लाने-ले-जाने के लिए किया गया। रिक्शा चलाने का काम अक्सर, इन शहरों में रोजगार के लिए आने वाले किसानों द्वारा किया जाता था। शुरूआत में रिक्शों का प्रयोग दो या तीन पहिए वाली सवारी गाड़ी के रूप में किया गया, जिसे खींचे जाने वाला रिक्शा कहा जाता था, जिसमें एक सवारी को बैठाकर एक व्यक्ति द्वारा खींचा जाता था। इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1887 में किया गया। समय के साथ-साथ, साइकिल रिक्शा, ऑटो रिक्शा और स्कूल रिक्शा का प्रयोग किया जाने लगा। चार डाक-टिकटों के सेट में देशवासियों द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे रिक्शों के विभिन्न रूपों को अंकित किया गया है।

भारत की सड़कों पर पहली मोटरकार वर्ष 1898 में देखी गई। भारत में कारों का आयात किया जाता था। ये कारें, वास्तव में, पश्चिम के पुराने (विन्टेज) मॉडल थे। कारों को स्थानीय रूप में असेंबल करने का कार्य विश्व युद्धों के बीच की अवधि के दौरान आरंभ किया गया। मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में असेंबली यूनिट स्थापित की गई। रॉल्स-रॉएस सिल्वर घोस्ट मॉडल की शुरूआत के साथ रॉल्स-रॉएस द्वारा "विश्व में सर्वश्रेष्ठ कार" बनाने का दावा किया गया। विन्टेज कारों की श्रेणी में इसे सर्वाधिक कीमती विन्टेज कार माना जाता है। अप्रैल 1919 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात ऑस्टिन द्वारा एक बड़ी कार, "ऑस्टिन ट्वेंटी" का निर्माण किया गया और वर्ष 1930 तक इसका उत्पादन जारी रखा गया। वर्ष 1927 में ऑस्टिन 20/6 मॉडल के आरंभ होने के पश्चात, पहले मॉडल को ऑस्टिन 20/4 कहा जाने लगा। विन्टेज कारों की श्रेणी में, दूसरा प्रसिद्ध मॉडल शेवरले सीरीज बीए कंफेडरेट है, जो शेवरले द्वारा निर्मित एक अमरीकी गाड़ी है। घोर मंदी के समय इस गाड़ी का उत्पादन लगभग 6 लाख से घट कर मात्र 3 लाख रह गया और इस प्रकार इसमें भारी कमी देखी गई, लेकिन फिर भी अमरीकी गाड़ियों की बिक्री के मामले में शेवरले का प्रथम स्थान कायम रहा। चार खूबसूरत डाक-टिकटों के सेट में विंटेज कार के विशिष्ट मॉडल अंकित किए गए हैं।

सार्वजनिक यातायात सामाजिक आवागमन की जीवन रेखा है। यात्री सड़क परिवहन सेवा (पीआरटीएस) किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास से संबद्ध एक अनिवार्य घटक है। सार्वजनिक यातायात के विभिन्न साधनों में ट्राम, मेट्रो, बसें और डबल डेकर बसें शामिल हैं। ब्रिटिश उपनिवेशवाद की शुरूआत से मुम्बई और कोलकाता सहित कई शहरों में ट्राम सेवा की शुरूआत हुई। कोलकाता में यह सेवा अभी भी प्रचलन में है और यह यातायात का एक उत्सर्जन-मुक्त साधन है। भारतीय शहरों में यातायात के सार्वजनिक साधन के रूप में बसों का प्रयोग 90% से अधिक है। बस सेवा समाज के सभी वर्गों के लिए यातायात का सस्ता और सुविधाजनक साधन है। मेट्रो सेवा देश के कई प्रमुख शहरों में यातायात का लोकप्रिय साधन बन गई है। 4 डाक-टिकटों के सेट में सार्वजनिक यातायात के साधनों का सुन्दर अंकन किया गया है।

डाक विभाग विभिन्न युगों में यातायात के साधनों पर 6 मिश्रित शीटलेट्स सहित प्रेस्टिज पुस्तिका जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

पाठ : इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रेस्टिज पुस्तिका/शीटलेट्स/ मैक्सिम कार्ड/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण मुहर : श्री ब्रह्म प्रकाश

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा (5), 1000 पैसा (5), 1500 पैसा (5), 2500 पैसा (5)
Denomination	: 500 p (5), 1000 p (5), 1500 (5), 2500 p (5)
मुद्रित शीटलेट्स (6 प्रकार)	: 15000 प्रत्येक
Sheetlets Printed (6 types)	: 15000 each
मुद्रित प्रेस्टिज पुस्तिका	: 50000
Prestige Booklet Printed	: 50000
मुद्रित मैक्सिम कार्ड (20 प्रकार)	: 3000 प्रत्येक
Maxim Cards Printed (20 types)	: 3000 each
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
Printer	: India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00